Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 6 (2022) pp: 18-23
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

शीर्षक- "भूमंडलीयकरण : हिंदी कविता के परिदृश्य में"

हेमा जोशी (अनुसंधित्सु)
डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊं विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखंड

***R**eceived 22 May, 2022; **R**evised 02 June, 2022; **A**ccepted 04 June, 2022 © The author(s) 2022.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

सारांश - भूमंडलीकरण शब्द की धमक पिछली सदी के उत्तरार्ध में सुनाई पड़ी थी। भूमंडलीकरण को समझने के लिए यदि हम इसे एक वाहन के समान माने तो इसके चार पहिए क्रमशः निजीकरण, पूंजी बाजार का उदारीकरण, बाजार आधारित मूल्य निर्धारण और मुक्त बाजार हैं । भूमंडलीकरण रूपी वाहन अपनी यात्रा सुचारू रूप से जारी रखने के लिए भाषा और संस्कृति की सड़कों या रास्तों का उपयोग करता है। भूमंडलीकरण एक जटिल आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रक्रिया है। 'भूमंडलीकरण' या 'वैश्वीकरण' का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर विस्तार से है। इसे हम इस रूप में भी व्याख्यायित कर सकते हैं कि पूरे विश्व के लोग एक साथ मिलकर विश्वग्राम की परिकल्पना के अंतर्गत एक ग्राम (समाज) बनाते हैं और मिलकर एक साथ कार्य करते हैं। भारत के संदर्भ में हम देखें तो भारत एक विकासशील राष्ट्र है। भारत को इस वैश्वीकरण का लाभ भी मिल रहा है और साथ ही हानियां भी झेलनी पड़ रही हैं। जहाँ एक ओर हम 'वसुधैव-कुटुंबकम' की भावना के साथ विकास के मार्ग पर ऊँचाइयों को छू रहे हैं वहीं दूसरी ओर भूमंडलीकरण के साथ पाश्चात्य संस्कृति ने संपूर्ण भारतीय संस्कृति पर जोरदार प्रहार किया है। हिंदी कविता अपने तरीके से इन सब का जवाब दे रही है। कवि केदारनाथ सिंह के शब्द में, 'मुँह में बचे हुए चावल के स्वाद को, कुछ अदृश्य कंकड़ियों के हस्तक्षेप से बचाने का नाम कविता है।' कविता सदैवजीवन के स्वाद को बनाए रखने और बचाए रखने का निरन्तर प्रयास करती है। वह आम-जन को इसके लिए चेताती भी है और उसे लोक-सम्मत बनाने का पुरजोर प्रयास करती है। भूमण्डलीयकरण (वैश्वीकरण) जैसी महत्वपूर्ण वैचारिकी के सम्बंध में भी हिंदी कविता लगातार अपनाहस्तक्षेप करती रही है। इसी हस्तक्षेप का विश्लेषणात्मक अध्ययन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

बीज शब्द - भूमण्डलीयरण (ग्लोब्लाइजेशन), निजीकरण, उदारीकरण, पूंजी-प्रवाह, व्यापार-प्रवाह, प्रौद्यौगिकी-प्रवाह।

प्रस्तावना - भूमंडलीकरण का आशय विभिन्न देशों के बाजारों एवं उनमें बेची जाने वाली वस्तुओं में एकीकरण से है, जिसमें विदेशी व्यापार की बढ़ती हुई प्रवृत्ति, उन्नत प्रौद्योगिकी की निकटता आदि के कारण विश्व व्यापार को बढ़ावा मिलता है। भूमंडलीकरण से संपूर्ण विश्व में परस्पर सहयोग एवं समन्वय से एक बाजार के रूप में कार्य करने की शक्ति को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रक्रिया में वस्तुओं एवं सेवाओं को एक देश से दूसरे देश में आने एवं जाने के अवरोधों को समाप्त कर दिया जाता है। "अंग्रेजी के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द के लिए हिंदी में 'भूमंडलीकरण' शब्द प्रचलित है। इसके लिए 'वैश्वीकरण' शब्द भी प्रयुक्त होता है। यह शब्द बीसवीं सदी के अंतिम दशक में व्यापक रूप में प्रयोग में आया। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद जब दुनिया एक ध्रुवीय हो

गई और अमेरिका के नेतृत्व में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने दुनिया के, खास तौर पर तीसरी दुनिया के बाजार पर कब्जा जमाना शुरू किया तो इसे न्यायसंगत ठहराने के लिए 'भूमंडलीकरण' जैसा आकर्षक नाम दिया गया।"[1] शब्दकोश में 'भूमंडलीकरण' शब्द 1961 में शामिल हुआ था। परंतु 1990 के दशक में दैनिक बोल- चाल की भाषा में इसका प्रयोग आरंभ हुआ। 'भूमंडलीयकरण' शब्द का अर्थ स्पष्ट करना एक कठिन कार्य है क्योंकि विभिन्न प्रकार के लोग इसे विभिन्न रूपों में लेते हैं। भूमंडलीकरणको वृहद अर्थों में देखें तो इससे तात्पर्य है कि वैश्विक आधार पर एक आर्थिक एवं सांस्कृतिक नेटवर्क का विकास, जो विभिन्न क्षेत्रों को आपस में बड़ी ही तीव्रता से जोड़ रहा है तथा जिसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों एवं वहाँ निवास करने वाले समुदायों पर देखा जा सकता है।

भूमंडलीकरण के घटक - भूमंडलीकरण के तीन महत्वपूर्ण घटक हैं- व्यापार प्रवाह, पूंजी प्रवाह, प्रौद्यौगिकी प्रवाह। ये तीनो ही घटक भूमण्डलीयकरण के महत्वपूर्ण तत्व हैं। आइए इसे एक चित्र के माध्यम से समझते हैं-

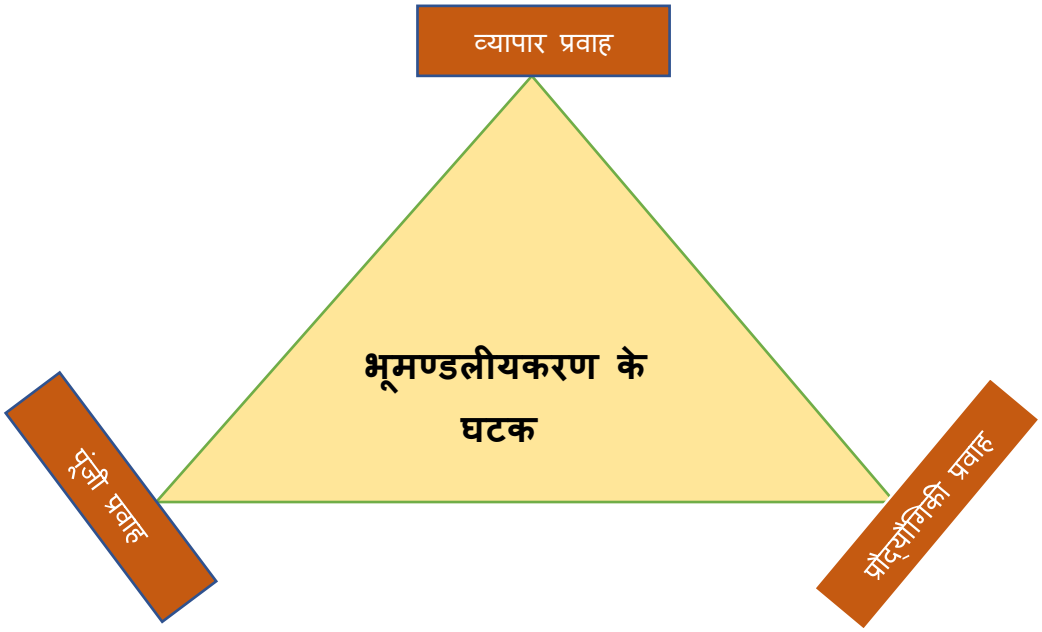

भूमण्डलीयकरण के नकारात्मक प्रभाव-

सोवियत संघ के विघटन का विश्वव्यापी प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप संपूर्ण विश्व में भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की आंधी बहने लगी। मानवीय संबंधों के स्थान पर बाजार का प्रभुत्व बढा। पूंजी सर्वशक्तिमान हो गई, जिसके बल पर कुछ भी खरीदा जा सकता है।

"जगह-जगह पर
मदारी बैठा दिए गए हैं
जहा बिकती हैं खुद की परछाइयां"[2]

कवि दिनेश जुगरान अपनी इस कविता के माध्यम से बाजार के प्रभाव की ओर संकेत करते हैं कि बाकि की तो बात ही क्या अब तो मानव की परछाई भी बिकाऊ हो गई है।

केदारनाथ अग्रवाल जी अपनी कविता एक 'छोटा सा अनुरोध' में कहते हैं कि

"आज की शाम
जो बाजार जा रहे हैं
उनसे मेरा अनुरोध है
एक छोटा-सा अनुरोध

क्यों न ऐसा हो कि आज शाम
हम अपने थैले और डोलचियां
रख दें एक तरफ
और सीधे धान के मंजरियों तक चलें।"[3]

कवि लीलाधर जगूड़ी के 'खबर का मुंह विज्ञापन से ढका है' नामक काव्य संग्रह की कुछ पंक्तियों को देखें तो भारत के संदर्भ में वे अपनी बात रखते हुए कहते हैं कि-
"जिसके पदार्थों का पहले ही भूमंडलीकरण किया जा चुका हो,
उसके आलू-कचालू का बारहमासी स्वाद
उसे ही बेचते हुए;
शिकंजी और जलजीरे को अपने शिकंजे में लेते हुए,
हल्दी और अदरक की गांठ मुंह में दबाए हुए
वह पूरे वातावरण के मुंह से बोलता दिखता है।
वायुमंडल उसी के संदेश से लदा है
उसके व्यापारिक लोकतंत्र में जो न खाए-पिए
ताज्जुब नहीं वह कहलाए अस्तरीय असभ्य और हेय।"[4]

भूमंडलीकरण के प्रभाव को, बाजारवाद के माया-जाल को कवि एक प्रकार की परतंत्रता घोषित करता है। हम आज प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्र होते हुए भी परोक्ष रूप से परतंत्र हुए जा रहे हैं। कवि ज्ञानेंद्रपति 'आजादी उर्फ गुलामी' कविता की इन पंक्तियों में इन भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि -
"आजादी के गोल्डन जुबली साल में
बाजार से अपनी चीज चुरा चुनने की आजादी
और आपकी पसंद
वे तय करते हैं जिनके पास है उपकरणों का काया बल
विज्ञापनों का माया बल
आपको आजादी पसंद है
उन्हें चीजों का गुलाम बनाने की आजादी।"[5]

आज बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में निवेश कर रही हैं, व्यापार कर रही हैं। व्यापार के नाम पर तो पहले भी कई विदेशी कंम्पनियां भारत आईं और'उपनिवेशवाद' के नाम पर इस दंश को हम पहले ही झेल चुके हैं। अंतर इतना है कि पहले बागडोर ब्रिटेन के हाथ में थी अब यह कमान अमेरिका के हाथ में है। अब पुनः 'नव उपनिवेशवाद' के रूप में भविष्य की एक बड़ी समस्या हमारे समक्ष मंडरा रही है। परंतु एक कवि और उसकी कविता इस पर पैनी नजर बनाए हुए है। केदारनाथ सिंह की कविता बाजार से सीधी-सीधी टक्कर लेती है।
"जाना था बाजार
मोमबत्ती की रोशनी में
मैं लिखता रहा कविता
क्योंकि सारे हिंदुस्तान में
बिजली गुल थी
अब यह कैसे बताऊं
लेकिन छुपाऊं भी तो क्यों
कविता और बाजार की हल्की-सी भी टक्कर

रोमांचित करती है मुझे"[6]

आज बाजार मनुष्य के जीवन से जुड़े हर पहलू में अपना हस्तक्षेप कर रहा है। कवि केदार की कविताएं भी बार-बार बाजार पर हस्तक्षेप करती हैं और उससे दो-दो हाथ करने को हमेशा तत्पर रहती हैं। यह भाव एक कवि के हृदय को रोमांच से भर देता है कि उसकी कलम बाजार से टक्कर लेने में पूर्णतया समर्थ है।

हम अपने पूर्वजों से सुनते आए हैं कि किसी प्यासे को पानी पिलाने का बड़ा धर्म होता है। जल प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहार है, उसका कोई मोल नही। पर आज की सदी में तो पानी भी बिक रहा है। इसी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कवि अरविंदाक्षन अपनी एक कविता 'अफ़सोस' में बिक रही पानी की बोतलों पर अफसोस जाहिर करते हैं और 'पेरियार का पानी' शीर्षक कविता में अपने भावों को इस प्रकार प्रकट करते हैं-

"खबर एकदम अजीब
पेरियार का पानी बिक रहा है
पेरियार हमें सहेजकर बहती है
पेरियार हमारे लिए नदी नहीं
मेरा हृदय कांप उठता है
मां का पानी भी बेचा जा सकता है।"[7]

विकास की इस होड़ में औद्योगिकीकरण के नाम पर विशेष आर्थिक क्षेत्र के लिए लाखों पेड़ काट दिए जाते हैं। जो कि हमेशा चिंता का विषय रहे हैं। जिसका नकारात्मक प्रभाव अनेक प्राकृतिक आपदाओं के रूप में देखने को मिल रहा है। आदिवासी जन-जीवन जिसके जीवन का आधार वृक्ष, जल, माटी है। उसके जीवन मूल्यों पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ता है। संथाल परगना क्षेत्र की कवयित्री निर्मला पुतुल अपनी कविता 'संथाल परगना' में इस ओर इशारा करते हुए कहती हैं कि-

"इतना भी नहीं बचा है 'वह'
संथाल परगना में
जितने की उनकी
संस्कृति के किस्से"[8]

टीवी और इंटरनेट के माध्यम से बहुराष्ट्रीय कंपनियां उपभोक्तावाद और पश्चिमी मूल्यों का प्रचार प्रसार कर रही हैं। पेप्सी, कोकाकोला, वुडलैंड, एडिडास, टाइटन जैसे उत्पाद;एमटीवी, एचबीओ, जैसे मनोरंजन के चैनल;मिकी माउस, शिनचेन, डोरेमॉन जैसे काल्पनिक चरित्र; मैकडॉनल्ड जैसी फास्ट फूड श्रृंखलाएं; एमवे जैसे उत्पाद; शाओमी, रीयलमी, सोनी, सेन्सुई,ओप्पो, वीवो जैसे मोबाईल उत्पाद; ऑनलाइन शॉपिंग एप्स (अमेजन) आदि सभी विकसित राष्ट्रों के जीवन-मूल्यों को विश्व के विकासशील राष्ट्रों पर थोपने के साधन भी साबित हुए हैं। इससे विकासशील और अविकसित राष्ट्रों की मौलिक संस्कृति पर पहचान का संकट खड़ा हो गया है।

"आजकल बेखौफ हमारी सरहदें पार कर रहे हैं
दवा, दारू, दंतमंजन, लिपिस्टिक, कोक, पेप्सी, बर्गर
पूरे बाजार में मची है अफरा-तफरी"[9]

<u>भूमण्डलीयकरण के सकारात्मक प्रभाव</u>-

वैश्वीकरण के कारण दुनिया के राष्ट्रों के बीच व्यापार बढ़ा है, जिस कारण वैश्वीकरण में सम्मिलित इन सभी राष्ट्रों के बीच आपसी निर्भरता भी काफी बढ़ी है। अलग-अलग राष्ट्रों की जनता, व्यापार और सरकार के बीच जुड़ाव बढ़ता जा रहा है। उदारीकरण की नीति से आयात-निर्यात, निवेशीकरण की प्रक्रियाएं सरल हो गई हैं। इस खुलेपन के कारण दुनिया के ज्यादातर आबादी की खुशहाली बढ़ी है। इस कारण से वैश्वीकरण के समर्थक इसको

दुनिया के लिए वरदान मानते हैं। कवि नीरज अपनी कविता 'परिवर्तन' के माध्यम से इस विचारधारा का स्वागत करते हुए कहते हैं कि-

"सुंदर है ख्वाब, पलने दीजिए
नई चली है हवा, बहने दीजिए
जमाना बदल रहा है, आप भी बदलिए
पुराने ख्यालों को रहने दीजिए"[10]

पहले अलग-अलग राष्ट्र अपने यहाँ दूसरे राष्ट्रों से होने वाले आयात पर प्रतिबंध और भारी भरकम टैक्स लगाते थे। लेकिन अब यह प्रतिबंध कम हो गए हैं। जिसका लाभ यह हुआ है कि अमीर देशों के निवेशक अपना पैसा गरीब राष्ट्रों में लगा सकते हैं। खासकर विकासशील और अविकसित राष्ट्रों में, जहां उन्हें लाभ अधिक मिलेगा। इस निवेश से इन पिछड़े राष्ट्रों में ढांचागत संरचनात्मक विकास, तकनीक और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। जिससे राष्ट्र विशेष की जनता का जीवन स्तर भी ऊपर उठता है।

वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में विश्व व्यापार संगठन (WTO) जैसे संगठन ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीति -निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले अंतरराष्ट्रीय व्यापार में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' की परिस्थितियां थीं। लेकिन आज सभी राष्ट्र व्यापारिक एवं श्रम कानूनों से बंधे हुए हैं। जिसका उल्लंघन करने पर विश्व समुदाय द्वारा उस राष्ट्र विशेष पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं।इसका ताजा उदाहरण हम 'रूस-यूक्रेन युद्ध' के संदर्भ में देख सकते हैं। आपसीमतभेदों के चलते रूस द्वारा युद्ध की पहल की गई और युद्ध किसी भी समस्या के समाधान का प्राथमिक विकल्प नही हो सकता है। अतएव विश्व-समुदाय द्वारा रूस पर कई आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए गए हैं। वैश्वीकरण के समर्थकों का मानना है कि तकनीकी के विकास एवं सूचना तथा विचारों की तीव्र गतिशीलता ने राष्ट्रों की क्षमता में बढ़ोतरी की है और वह अपने आवश्यक कार्यों, उदाहरण स्वरूप- कानून व्यवस्था बनाए रखना, बाहरी आक्रमणों से राष्ट्र की सुरक्षा करने जैसे कार्यों को पहले से अधिक अब ज्यादा अच्छे और बेहतर तरीके से कर पा रहे हैं। विश्व के तमाम राष्ट्र आज परस्पर निर्भर हैं। आज जिस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, वह केवल एक राष्ट्र या सरकार तक सीमित ना होकर वैश्विक समस्याएं हैं। जैसे- जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन, भुखमरी, एड्स, मलेरिया, कुपोषण, ऊर्जा संकट, आतंकवाद इत्यादि जैसी समस्याएं किसी एक देश तक सीमित नहीं हैं। तमाम राष्ट्र अपने कूटनीतिक संबंधों द्वारा अपने आपसी विवादों को हल करना चाहते हैं। साथ ही साथ इस आर्थिक जुड़ाव के कारण वैश्विक समस्याओं (आतंकवाद,जलवायु-परिवर्तन, कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी) से निपटने के लिए साझा कार्यवाही को प्रोत्साहित करते हैं। यह वैश्वीकरण का ही परिणाम है जिसके द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, चिंतन-बैठकों का आयोजन कर समस्याओं के समाधान हेतु समझौते किए जा रहे हैं।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों ने दुनिया को वास्तव में एक वैश्विक ग्राम बना दिया है। संचार व्यवस्था में आई क्रांति ने विश्वव्यापी संपर्क को काफी तेज कर दिया है। टेलीफोन, मोबाइल, इंटरनेट सिस्टम और वेबसाइटों के माध्यम से लोगों, व्यापारियों एवं राजनेताओं में मानो कोई दूरी ही नहीं रह गई है। आज हम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग(गूगल मीट, ज़ूम आदि) के माध्यम से विश्व के किसी भी जगह होने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी कर सकते हैं। इससे हमारे समय और धन दोनों की बचत होती है। चिकित्सा, कृषि, शिक्षा, कानून व्यवस्था, व्यापार प्रचार-प्रसार आदि क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है।

सांस्कृतिक वैश्वीकरण में वेशभूषा जैसे- जींस, ट्राउजर, साड़ी, कुर्ता-पजामा इत्यादि एवं खानपान भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जैसे- उदाहरण के रूप में डॉनल्ड का बर्गर, पिज्जा आपको दुनिया की किसी भी राष्ट्र की राजधानी में मिल जाएगा। आज भारत में भी चाऊमीन ,पिज़्ज़ा, बर्गर जैसे फास्ट फूड्स का प्रचलन काफी बढ़ा है और दुनिया के किसी भी कोने में आज भारतीय व्यंजनों का आनंद उठाया जा सकता है। 'जोमेटो' जैसी भारतीय कंपनी

आज लगभग 22 देशों के 10,000 शहरों में ऑनलाइन फूड डिलीवरी का कार्य कर रही है, जो कि भूमंडलीकरण का ही एक सकारात्मक प्रभाव है। आज 'उदारचरितानान्तुम, वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को बल मिला है। रामदरश मिश्र अपनी कविता 'विश्वग्राम' में कहते हैं कि

"विश्व ग्राम
कितना अच्छा लगा था यह शब्द
एक संगीत-सा गूँज उठा था मन में
वाह, कितनी सदियों के बाद
हमारा 'वसुधैव कुटुंबकम' रूप ले रहा है
अब देश तो क्या
पूरा विश्व एक गांव में परिणत हो रहा है।"[11]

<u>निष्कर्ष-</u> बाजार सभी को लुभाता रहा है। बच्चे, बूढ़े और जवान सभी पीढ़ियां बाजारवाद के इस भौतिक आनंद में डूब जाना चाहती हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं की आकांक्षा सभी को बाजार की ओर आकृष्ट करती है। इस ईक्कीसवीं सदी में विकासशील राष्ट्रों के लिए भूमंडलीयकरण की महती आवश्यकता है। अतः इससे मुँह तो नही मोड़ा जा सकता परंतु आवश्यकता है, अतिवाद से बचने की। संतुलित रूप में सभी क्रियाएं, व्यापार, सिद्धांत, व्यवहार, लाभकारी सिद्ध होते हैं परन्तु असंतुलन हमेशा हानि का कारण बनता है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि समकालीन कविता भूमंडलीकरण, बाजारवाद,उपभोगवादी संस्कृति में बाजारवाद का वर्चस्व आदि सभी विषयों को लेकर जन को चेताती है। उसे महसूस कराती है उसके समसामयिक समय की उथल-पुथल को। इधर की कविता ने भूमण्डलीयकरण की वैश्विक सोच और भारतीय सोच को एक नया आयाम देने का प्रयास किया है। अतः सोच-समझकर हमें भूमंडलीकरण रूपी इस आंधी में मजबूत कदम बढ़ाना होगा, जिससे हमारा संतुलन बना रहे और इस अंधी दौड़ (रेस) में हम मुंह के बल गिरें नहीं अपितु विकास की दौड़ को जीत पाएं।

<u>संदर्भ</u>-

1) डा. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन,2011, पृष्ठ-258
2) जितेंद्र श्रीवास्तव, विचारधारा-विमर्श और समकालीन कविता, किताबघर प्रकाशन,2013, पृष्ठ-157
3) केदारनाथ अग्रवाल,उत्तर कबीर और अन्य कविता,राजकमल प्रकाशन,1995, पृष्ठ-13)
4) लीलाधर जगूड़ी, खबर का मुंह विज्ञापन से ढका है, वाणी प्रकाशन,2014, पृष्ठ-103)
5) ज्ञानेंद्रपति, संशयात्मा, किताबघर प्रकाशन, 2004, पृष्ठ-123
6) जितेंद्र श्रीवास्तव, विचारधारा-विमर्श और समकालीन कविता, किताबघर प्रकाशन, 2013, पृष्ठ-91,92
7) जितेंद्र श्रीवास्तव, विचारधारा-विमर्श और समकालीन कविता, किताबघर प्रकाशन, 2013, पृष्ठ-102
8) जितेंद्र श्रीवास्तव, विचारधारा-विमर्श और समकालीन कविता, किताबघर प्रकाशन, 2013, पृष्ठ-257
9) विनोद दास, कविता का वैभव (आलोचना ग्रंथ), पृष्ठ-33
10) सं. देवशंकर नवीन / सुशांत कुमार मिश्र,उत्तर-आधुनिकता कुछ विचार,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, प्रथम-संस्करण, 2010, पृष्ठ-48
11) सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी,समकालीन भारतीय साहित्य, जुलाई-अगस्त, 2011, पृष्ठ-156